BINOD BIHARI MAHTO KOYALANCHAL UNIVERSITY, DHANBAD, JHARKHAND

दर्शनशास्त्र विभाग (मानविकी संकाय) में पीएच० डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रस्ताव

"बौद्ध एवं जैन नीतिशास्त्र का समीक्षात्मक अध्ययन एवं उनकी वर्तमान कालीन प्रासंगिकता"

शोध-निर्देशक:

डॉ० कृष्ण मुरारी

असिस्टेंट प्रोफेसर (दर्शनशास्त्र विभाग)

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद

शोधार्थी :

प्रियंका बनर्जी

दर्शनशास्त्र विभाग

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद

वर्ष – 2024

शोध शीर्षक :

बौद्ध एवं जैन नीति शास्त्र का समीक्षात्मक अध्ययन एवं उनकी वर्तमान कालीन प्रासंगिकता

1. विषय प्रवेश : (Introduction)

प्रस्तावित शोध का विषय **"बौद्ध एवं जैन नीति शास्त्र का समीक्षात्मक अध्ययन एवं उनकी वर्तमान कालीन प्रासंगिकता"** है। यह प्रस्तावित शोध में बौद्ध एवं जैन शास्त्र में उल्लेख नैतिक विचारों का अध्ययन एवं उनकी वर्तमान कालीन प्रासंगिकता को अनुसंधान करने की प्रयास किया जाएगा।

नीतिशास्त्र दर्शनशास्त्र का एक प्रमुख शाखा है। इसे नीति-दर्शन, नीति-विज्ञान और व्यवहार दर्शन भी कहा जाता है। "नैतिक दर्शन या नीतिशास्त्र दर्शन की एक शाखा है जो 'सही' और 'गलत' की धारणाओं को व्यवस्थित, संरक्षण और संशोधन या वृद्धि की सिफारिश करती है"।[1] नीतिशास्त्र मुख्यतः मनुष्य क्रिया एवं आचरणों का मूल्यांकन करता है। नीतिशास्त्र मनुष्य के ऐच्छिक कर्म के संबंध में सही या गलत, उचित या अनुचित होने का मानदंड तथा आदर्श प्रस्तुत करता है। नीतिशास्त्र मनुष्य को उचित निर्णय लेने में मदद करता है और मानवीय क्षमता को विकसित करने में सहायक है।

"नीतिशास्त्र नैतिक सिद्धांतों या नियमों का एक समूह है जो किसी विशेष सामाजिक संरचना के भीतर किसी व्यक्ति के नैतिक कार्यों का मार्गदर्शन करता है। इसके अलावा, यह नैतिक विचारों और नैतिक निर्णयों में मानव व्यवहार के मानदंड को निर्धारित करता है"।[2]

नैतिक मूल्य मार्गदर्शन करते हैं कि कौन सा व्यवहार खुशी के लिए अनुकूल है या क्या समस्याएं पैदा करता है। जब हम ईमानदारी से दूसरों का सुख चाहते हैं, तो वे समझ जाते हैं कि हम उन्हें धोखा नहीं देंगे, उनका शोषण नहीं करेंगे या उनका दमन नहीं करेंगे। उनका भरोसा हम पर बढ़ता है। यह विश्वास ही मित्रता की आधारशिला है। वे बिना किसी भय-डर के हमारी साहचर्य में खुश और निश्चिंत हैं और हमें भी खुशी महसूस होती है।

मनुष्य सामाजिक प्राणी हैं। हमें जीवित रहने के लिए एक दूसरे की मदद की जरूरत है। यह सेवा केंद्र में सिर्फ नवजात शिशु या बुजुर्गों के बारे में नहीं है, बल्कि हम सभी को जीवन भर एक-दूसरे की देखभाल की जरूरत है। प्यार, दोस्ती से हमें भावनात्मक सुरक्षा मिलती है और यही जीवन को परिपूर्ण बनाती है। नैतिकता में गहरा विश्वास इसे सक्षम बनाता है।

आज के भौतिकवादी युग में मनुष्य आत्म-केंद्रित हो गए हैं। इसलिए मानव समाज में प्रेम, दया और नैतिकता जैसे मानवीय गुण लुप्त हो रहा है। इस गंभीर स्थिति में बौद्ध एवं जैन नीतिशास्त्र का अध्ययन मानव में नैतिक एवं आध्यात्मिक गुणों को विकसित करके परिपूर्णता प्राप्त करने में निश्चित रूप से सहायक होगा।

2. साहित्य की प्रारंभिक समीक्षा : (State-of-the-art)

“नैतिकता नैतिक सिद्धांतों या मूल्यों का एक ऐसा समूह है जो अच्छाई और बुराई से और नैतिक कर्तव्यों और दायित्वों से संबंधित है”।[3] नैतिकता उन मानदंडों को संदर्भित करती है जो बलात्कार, चोरी, हत्या, हमले, बदनामी और धोखाधड़ी से बचने के लिए उचित दायित्वों को लागू करती हैं। इसमें नैतिक मूल्य भी शामिल हैं जो ईमानदारी, करुणा और मानवीय गुणों को इंगित करते हैं।

मनुष्य अन्य सभी जीवों से सर्वश्रेष्ठ है। क्योंकि वह बौद्धिक एवं विवेकशील हैं। मनुष्य नैतिक प्राणी होने के कारण उचित-अनुचित की भावनाएं उसके स्वाभाविक गुण है। मनुष्य के कर्म का औचित्य एवं अनौचित्य का आलोचना दर्शनशास्त्र के जिस शाखा में मिलता है उसे नीतिशास्त्र कहते हैं। इसे आचार दर्शन, नीति-विज्ञान, नीतिविद्या के नाम से भी संबोधित किया जाता है। आचार दर्शन मनुष्य को सही निर्णय लेने में और मानवीय मूल्य को उजागर करने में मदद करता है।

“नीतिशास्त्र का अंग्रेजी शब्द है ‘एथिक्स’ (Ethics)। ग्रीक शब्द ‘एथॉस’ (Ethos) से यह शब्द लिया गया है। ‘एथॉस’ का अर्थ है ‘चरित्र’। नीतिशास्त्र का पर्यायवाची शब्द है ‘मौरल फिलौसोफी’ (Moral Philosophy)। ‘मौरल’ शब्द लैटिन शब्द ‘मॉरिस’ से लिया गया है। इसका अभिप्राय है रिती-रिवाज।”[4] इस प्रकार नीतिदर्शन का मुख्य अर्थ हुआ मनुष्य चरित्र, रीति-रिवाज और ऐच्छिक आचरणों का मूल्यांकन करना। कैम्ब्रिज डिक्शनरी के अनुसार, “नैतिकता अच्छे और बुरे व्यवहार, पारदर्शिता, ईमानदारी आदि से संबंधित गुण है, जिसे प्रत्येक व्यक्ति किसी अन्य मामले से अधिक महत्व देता है”।

भारतीय ऋषि-मुनियों ने जीवन में विभिन्न प्रकार के दुःखों को पाकर उनसे निवृत्ति पाने के लिए सदैव कोशिश करते रहे। “भारतीय नीति शास्त्र में ऋषियों, मुनियों, सिद्धो, सन्तों , विचारकों ने अपनी-अपनी साधनाओ के द्वारा जीवन के सम्बन्ध में जो दृष्टि और सिद्धान्त बनाये उनके आधार पर उन्होंने जन साधारण को जो धर्म सदाचार, या नीति सम्बन्धी उपदेश लोगों के और समाज के कल्याण के लिये समय- समय पर दिये हैं उनका संकलन है। ”[5]

“संस्कृत-परम्परा के अनुसार ‘नी+क्तिन्’ शब्द से ‘नीति’ शब्द आया है। जिसका अर्थ है आचरण, निदर्शन, दिग्दर्शन आदि। ‘नीति’ शब्द का अभिप्राय है नियम, जिस पर चलने से मनुष्य का नैतिक, आध्यात्मिक रूप से परिपूर्ण

कल्याण हो और समाज तथा विश्व में शांति बना रहे। नीतिशास्त्र के नियमों को पालन करने से व्यक्ति और समाज दोनों के लिए अच्छा है।”[6]

मनुष्य विचारशील प्राणी है, इसलिए चिन्तन और मनन करना उसका प्रधान लक्षण है। भारत में नैतिकता की चर्चा प्राचीन काल से चली आ रही है। भारतीय नीतिशास्त्र का विकास बहुत ही प्राचीन है। भारतीय दर्शन में नैतिकता का उल्लेख मिलता है वेद, उपनिषद, धर्मशास्त्र, महाभारत, रामायण, गीता, दर्शन ग्रंथ आदि में। आधुनिक युग में राजा राममोहन राय, रामकृष्ण, विवेकानन्द, महात्मा गाँधी आदि महापुरुषों ने नैतिक विचारों के ऊपर अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। भारत के सभी दार्शनिकों ने वेद और उपनिषद को अपनी नैतिक विचारों का स्रोत माना है।

समस्त भारतीय दार्शनिक संप्रदाय का मुख्य उद्देश्य है मोक्ष की प्राप्ति। मानव जीवन की सबसे प्रमुख समस्या है दुःखों का निवृत्ति। बौद्ध नीतिशास्त्र में द्वितीय आर्य-सत्य के रूप में दुःखों के कारणों का उल्लेख किया है और चतुर्थ आर्य-सत्य में अष्टांगिक मार्ग के मोक्ष प्राप्ति का साधन मार्ग बताया गया है। वहीं जैन नीतिशास्त्र में त्रिरत्न का पालन को मोक्ष प्राप्ति का साधन मार्ग बताया गया है। इस प्रकार बौद्ध एवं जैन नीति दर्शन अध्ययन से मनुष्य की चरम उद्देश्य एवं उसकी उपलब्धि का मार्ग मिल सकता है।

बौद्ध दर्शन :

महात्मा बुद्ध बौद्ध दर्शन के प्रणेता थे। बुद्ध के शिष्यों ने उनके उपदेशों को एक दार्शनिक शास्त्र की रूप प्रदान किया है। बुद्ध को तत्व-ज्ञान अर्थात बोधि (enlightenment) प्राप्त करने के पश्चात जीवन के चार सत्य का उपलब्धि हुआ जो 'आर्य-सत्य चतुष्टय' के नाम से प्रसिद्ध है। बुद्ध की समस्त शिक्षाएं किसी ना किसी तरह से इन चार आर्य-सत्य में समाहित है। यह चार आर्य-सत्य है –

प्रथम आर्य-सत्य :- (सर्व दुःखम्) - संसार दुखों से परिपूर्ण है।

द्वितीय आर्य-सत्य :- (दुःखसमुदय:) - महात्मा बुद्ध ने परंपराक्रम में दुख के बारह कारणों का उल्लेख किया है - अविद्या (Ignorance), संस्कार (Impressions), विज्ञान (Consciousness), नामरूप (Mind body organism), षड़ायतन (Six sense organs), स्पर्श (Sense contact), वेदना (Sense experience), तृष्णा (Craving), उपादान (Mental Clinging), भव (The will to be born), जाति (Rebirth), एवं जरा-मरण(Suffering)। इनमें से दुःखों का मूल कारण है अविद्या।

तृतीय आर्य-सत्य :- (दुःखनिरोधः) दुःखों का नाश संभव है। बुद्ध ने दुःखों के कारणों को माना है। यदि हम दुःखों के कारण का नाश कर सके तो दुःखों का भी अन्त अवश्य होगा। दुःख मुक्ति अवस्था को बुद्ध ने निर्वाण की नाम से संबोधित किया है।

चतुर्थ आर्य-सत्य :- (दुःख निरोधः मार्ग) महात्मा बुद्ध ने दुःखों के नाश के लिए आठ मार्ग का उल्लेख किया है। इस प्रकार है – सम्यक् दृष्टि (Right Views), सम्यक् संकल्प (Right Resolve), सम्यक् वाक् (Right Speech), सम्यक् कर्मान्त (Right Actions), सम्यक् आजीविका (Right Livelihood), सम्यक् व्यायाम (Right Efforts), सम्यक् स्मृति (Right Mindfulness), एवं सम्यक् समाधि (Right Concentration)।

बुद्ध ने चार आर्य-सत्य की महत्व को 'मज्जिम निकाय' में इस प्रकार स्पष्ट किया है – "इसी से (चार आर्य सत्यों से) अनासक्ति, वासनाओं का नाश, दुखों का अन्त, मानसिक शान्तिः, ज्ञान तथा निर्वाण संभव हो सकते हैं।"[7]

ब्रह्मविहारः

बौद्ध नैतिक विचार का एक प्रमुख पहलू ब्रह्मविहार है। ब्रह्मविहार एक ऐसा विचार है जो मन को प्रेम और मैत्री के साथ ब्रह्मांड के लिए सोचने पर मजबूर करता है। ब्रह्मविहार में मैत्री, करुणा, मुदिता और उपेक्षा नामक चार प्रकार के ध्यान शामिल हैं। मित्रता की अवधारणा से ब्रह्मांड के सभी प्राणियों के कल्याण का चिंतन किया जाता है। करुणा भावना के माध्यम से पीड़ित लोगों की पीड़ा को दूर करने का प्रयास किया जाता है। किसी पीड़ित व्यक्ति को कष्ट से कैसे मुक्त किया जा सकता है, इसका विचार ही करुणामय चिंतन का आदर्श है। दूसरों की खुशी में खुश रहना ही मुदिता भावना का लक्ष्य है। मुदिता भावना में यह सलाह इसलिए दी गई है ताकि लोगों को दूसरों की खुशी से ईर्ष्या न करनी पड़े। क्रोध, भय, मोह से मुक्त होकर, हर चीज़ को निष्पक्ष रूप से देखना, उपेक्षा भावना का लक्ष्य है। ब्रह्म की खोज ब्रह्मविहार का लक्ष्य नहीं है। बौद्ध दर्शन में ब्रह्मविहार की व्याख्या एक पथ के रूप में की जाती है। बौद्ध दर्शन के अनुसार, इस मार्ग पर चलने से नैतिक विचार का विकास होता है। ब्रह्मविहार का महत्व को धम्मपदं में इस तरह व्यक्त किया गया है –

" मैत्ताविहारी यो भिक्खु, प्रसन्नो वुद्धसासने ।

अधिगच्छे पदं सन्तं, संस्कारपसमं सुखं ॥६॥"[8]

अर्थात जो भिक्षु मित्रतापूर्वक विहार करने वाला और बुद्ध के शासन में प्रसन्न रहने वाला है, वह संस्कारों को शमन करने वाले शान्त और सुखद पद को प्राप्त करता है। वस्तुतः यह ब्रह्मविहार बौद्ध धर्म के सार्वभौमिक प्रेम सिद्धांत की स्थापना में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

बौद्ध दर्शन सम्प्रदाय :

बौद्ध दर्शन मूलतः दो सम्प्रदायों में विभाजित है - 'हीनयान' तथा 'महायान'। हीनयान बौद्धधर्म दर्शन का प्राचीनतम रुप है और महायान बौद्ध दर्शन का विकसित रुप है। हीनयान के प्रमुख दो मत थे - वैभाषिक और सौत्रान्तिक और महायान के प्रमुख दो मत थे – माध्यमिक एवं योगाचार सम्प्रदाय। अर्थात बौद्ध दर्शन के चार प्रमुख शाखाएं है। ये शाखाएँ निम्नलिखित हैं-

1) माध्यमिक-शून्यवाद।
2) योगाचार-विज्ञानवाद।
3) सौत्रान्तिक-बाह्यानुमेयवाद।
4) वैभाषिक-बाह्य प्रत्यक्षवाद।

"इन शाखाओं के वर्गीकरण की जड़ में दो प्रश्न निहित हैं। वे हैं-(क) 'किस प्रकार की सत्ता का अस्तित्व है ?' (ख) 'बाह्य वस्तु का ज्ञान किस प्रकार होता है ?' पहला प्रश्न अस्तित्व-सम्बन्धी है जबकि दूसरा प्रश्न ज्ञान-सम्बन्धी है। हालांकि इन सम्प्रदायों के 'सत्ता' एवं 'ज्ञान-सम्बन्धी' विचारों कुछ महत्त्वपूर्ण भेदों के होते हुए भी उनके दर्शनों में नैतिक विचारों का विशेष अन्तर नहीं है।"[9]

'हीनयान' और 'महायान' सम्प्रदाय का नैतिक विचार :

'हीनयान' तथा 'महायान' सम्प्रदाय का नैतिक विचारों में कुछ महत्त्वपूर्ण भेद है। हीनयान अनीश्वरवादी और कर्मप्रधान दर्शन है। इसमें व्यक्तिगत साधना द्वारा व्यक्ति का निर्वाण प्राप्त करना ही जीवन का लक्ष्य है। इसका आदर्श 'अर्हत्' है जो अपने प्रयत्नों से अपने लिए निर्वाण प्राप्त करता है। इसके विपरीत महायान में सर्वमुक्ति की कल्पना है। इसका आदर्श 'बोधिसत्व' है जो अन्य आर्त पुरुषों के निर्वाण के लिए प्रयत्नशील रहता है। हीनयान के अनुसार बुद्ध एक महापुरुष थे जिन्होंने अपने प्रयत्न से निर्वाण प्राप्त किया और निर्वाण प्राप्ति के मार्ग का उपदेश दिया। महायान में बुद्ध को ईश्वर तथा त्रिकाय (धर्मकाय, निर्माणकाय और सम्भोगकाय) के रूप में वर्णन किया गया है।

❖ हीनयान बौद्ध सम्प्रदाय के अनुसार नैतिक विचार :

हीनयान बौद्ध सम्प्रदाय में नैतिकता एक केंद्रीय भूमिका निभाती है। इस संप्रदाय में पाँच नैतिक उपदेशों का पालन कि निर्देश दिया है। ये उपदेश हैं:

- जीवों को हत्या या नुकसान न करना।
- दूसरे लोगों की चीजें न लें या चोरी न करें।
- अवैध यौन सम्बन्ध में लिप्त न होना।
- मिथ्या भाषण या झूठ न बोलना ।
- मन को प्रभावित करने वाले नशीले पदार्थों के सेवन न करें ।

इन उपदेशों का पालन करना नैतिकता और नैतिक जीवन जीने का एक मूलभूत आधार माना जाता है। इसके अतिरिक्त, करुणा, प्रेम-दया और उदारता जैसे अन्य गुणों पर भी ज़ोर दिया जाता है। अंतिम लक्ष्य ज्ञान प्राप्त करना और दुख से मुक्ति पाना है, जो एक सद्गुणी और नैतिक जीवन जीने से संभव होता है। हीनयान सम्प्रदाय में मठवासी भिक्षु के लिए नैतिकता अधिक विस्तृत और कठोर है, जिसमें भिक्षु और भिक्षुणियाँ विनय का पालन करते हैं, जो उनके आचरण को नियंत्रित करने वाले नियमों और दिशानिर्देशों का एक समूह है। हीनयान बौद्ध सम्प्रदाय में नैतिक व्यवहार केवल व्यक्तिगत आचरण के बारे में नहीं है, बल्कि यह किसी व्यक्ति के कार्यों के पीछे के इच्छा और मानसिकता भी जुड़े हुए होते है। भिक्षु और भिक्षुणियाँ को एक शुद्ध और दयालु हृदय विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जिसे आध्यात्मिक विकास और दुख के चक्र से मुक्ति की खोज में महत्वपूर्ण माना जाता है।

“हीनयान के अनुसार जीवन का चरम लक्ष्य अर्हत् होना या निर्वाण प्राप्त करना है।”[10] निर्वाण प्राप्ति के बाद मानव के समस्त दुःखों का नाश हो जाता है। हीनयान में स्वावलम्बन पर जोर दिया गया है। प्रत्येक मनुष्य अपने प्रयत्न से ही निर्वाण प्राप्त कर सकता है। निर्वाण प्राप्त करने के लिए मनुष्य को बुद्ध के चार आर्य-सत्यों का मनन एवं चिन्तन करना आवश्यक है। उसे किसी बाह्य सहायता की कामना करने के बजाय अपने कल्याण के लिए स्वयं प्रयत्न करना चाहिए । स्वयं बुद्ध ने कहा है 'आत्मदीपो भव' । परिश्रम के द्वारा अपनी मुक्ति का प्रयास करना चाहिए'-आत्मनिर्भर रहने का आदेश है। हीनयान को इस कठिन आदेश के कारण, कठिनयान (difficult path) भी कहा गया है।

हीनयान के मतानुसार व्यक्ति को सिर्फ निजी मोक्ष की चिन्ता करनी चाहिए। यही कारण है कि हीनयान के अनुयायी अपनी मुक्ति के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। हीनयान का यह आदर्श संकुचित है, क्योंकि इसमें लोक-कल्याण की भावना का निषेध हुआ है। इसके अतिरिक्त हीनयान के इस विचार में स्वार्थ-परता मौजूद है, क्योंकि व्यक्ति निजी मुक्ति को ही अपना अभीष्ट

मानता है। हीनयान में लोक-कल्याण की भावना का खण्डन होने के कारण महायानियों ने इसे हीन तथा अपने मत को महान् कहा है, क्योंकि महायान लोक-कल्याण की भावना पर आधारित है।

❖ महायान बौद्ध सम्प्रदाय के अनुसार नैतिक विचार

महायान बौद्ध धर्म में नैतिकता करुणा के सिद्धांतों पर आधारित है। इस समुदाय में न केवल अपने लिए बल्कि सभी संवेदनशील प्राणियों के लाभ के लिए ज्ञान प्राप्त करने की आकांक्षा में निहित है। महायान बौद्ध धर्म में प्रमुख नैतिक निर्देशों में शामिल हैं:

बोधिसत्व व्रत: महायान बौद्ध समुदाय सभी प्राणियों की मुक्ति और कल्याण के लिए अथक परिश्रम करने के लिए प्रतिबद्ध होते हैं। यह व्रत निस्वार्थता और परोपकार पर जोर देता है।

करुणा: करुणा एक महत्वपूर्ण नैतिक गुण है। यह मनुष्य में सभी संवेदनशील प्राणियों के लिए गहरी करुणा विकसित करने, उनके दुख को महसूस करने और उसे कम करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

प्रज्ञा: महायान नैतिकता का एक और आवश्यक पहलू है प्रज्ञा। इसमें वास्तविकता की प्रकृति और सभी चीजों की परस्पर निर्भरता को समझना शामिल है। यह ज्ञान करुणामय कार्यों की ओर ले जाता है।

अहिंसा: महायान बौद्ध धर्म सभी प्राणियों के प्रति अहिंसा को बढ़ावा देता है। इसमें हत्या, नुकसान या पीड़ा से बचना भी शामिल है।

दान: महायान बौद्ध दूसरों की मदद करने और भौतिक संपत्तियों के प्रति लगाव को कम करने के लिए दान (उदारता) का अभ्यास करते हैं। यह मनुष्य में नैतिक गुण को विकसित करने के तरीके के रूप में प्रोत्साहित किया जाता है।

नैतिक उपदेश: महायान बौद्ध धर्म आम तौर पर पाँच उपदेशों (हत्या, चोरी, यौन दुराचार, मिथ्या भाषण और मादक पदार्थों से परहेज) का पालन करता है और बोधिसत्व मार्ग पर चलने के लिए अतिरिक्त व्रत जोड़ सकता है।

सचेतनता: महायान नैतिकता में सचेतनता आवश्यक है, क्योंकि यह व्यक्तियों को उनके कार्यों, विचारों और इच्छाओं के बारे में जागरूक होने में मदद करती है, जिससे वे अपने नैतिक सिद्धांतों के अनुरूप तरीके से कार्य करने में सक्षम होते हैं।

धैर्य : महायान बौद्ध धर्म में धैर्य और सहनशीलता का अभ्यास करना अत्यधिक माना जाता है, खासकर जब कठिनाइयों और संघर्षों का सामना करना पड़ता है।

समभाव: महायान बौद्ध समभाव बनाए रखने का प्रयास करते हैं, सभी प्राणियों के साथ समान चिंता और दायित्व के साथ व्यवहार करते हैं, चाहे उनकी स्थिति या संबंध कुछ भी हो।

परोपकारी कार्य: सेवा, दान और दयालुता के निस्वार्थ कार्यों में संलग्न होना दूसरों को मुक्ति प्राप्त करने में मदद करने के लिए किसी की प्रतिबद्धता की नैतिक अभिव्यक्ति के रूप में देखा जाता है।

“महायान धर्म की सबसे बड़ी विशेषता बोधिसत्त्व की कल्पना है।”[11] बोधिसत्त्व की प्राप्ति ही जीवन का उद्देश्य है। महायान में अपनी मुक्ति की अपेक्षा संसार के समस्त जीवों की मुक्ति पर जोर दिया गया है। महायानी संसार के समस्त प्राणियों के समग्र दुःखों का नाश करा उन्हें निर्वाण प्राप्त करा देना अपने जीवन का उद्देश्य मानता है। उसका यह प्रण है कि जब तक एक-एक प्राणी मुक्त नहीं हो जाता हम स्वयं निर्वाण-सुख को नहीं भोगेंगे तथा लस्त मानव के निर्वाण लाभ के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। महायानियों का यह आदर्श बोधिसत्त्व कहा जाता है ।

महायान बौद्ध का अंतिम लक्ष्य बोधिसत्व बनना है, कोई ऐसा व्यक्ति जो सभी संवेदनशील प्राणियों के लाभ के लिए बुद्धत्व की आकांक्षा रखता है। यह नैतिक ढांचा करुणा, ज्ञान और परोपकार को किसी के जीवन और आध्यात्मिक यात्रा के मार्गदर्शक सिद्धांतों के रूप में बढ़ावा देता है।

जैन दर्शन :

बुद्ध दर्शन एवं जैन दर्शन को समकालीन माना गया है। जिस समय भारतवर्ष में बौद्ध दर्शन विकसित हो रहा था उसी समय पर जैन दर्शन का भी विकास हो रहा था। जैन दर्शन के प्रणेता थे चौबीस तीर्थंकर। इनमें से सर्वप्रथम तीर्थंकर थे ऋषभदेव। तेईसवें तीर्थंकर थे पार्श्वनाथ और अंतिम तथा चौबीसवें तीर्थंकर थे महावीर। महावीर के समय में ही जैन दर्शन आपने उत्कर्ष को प्राप्त किया था या यह कह सकते हैं सर्वाधिक विकसित हुआ था। तीर्थंकर उन व्यक्तियों को कहा जाता है जो मुक्त हैं। इन्होंने अपनी प्रयास के बल पर पूर्ण एवं मुफ्त हुए थे। इसलिए जैन दर्शन का मूल तत्व है तीर्थंकरों का वाणी एवं उपदेश। इनके बताये हुए मार्ग पर चल कर मानव बंधन से सदा के लिए मुक्त हो सकते हैं।

जैन सम्प्रदाय :

जैन दर्शन दो शाखाओं में विभाजित हैं। धर्म या सिद्धांत की दृष्टि से इनमें कोई विशेष अंतर नहीं है, कुछ बातों या नैतिक नियमों में ही अंतर है।

- श्वेतांबर नैतिक विचार के संबंध में कुछ हद तक उदारवादी हैं, लेकिन दिगंबर इस संबंध में बहुत रूढ़िवादी हैं।
- दिगंबर हमेशा नग्न रहते हैं जबकि श्वेतांबर सफेद कपड़े पहनते हैं।
- दिगंबर मानते हैं कि मोक्ष पाने के लिए नग्नता एक शर्त है, जबकि श्वेतांबर पूरी तरह नग्नता में विश्वास नहीं करते। वे पार्श्वनाथ के मार्ग का अनुसरण करते हैं, जो हमेशा सफेद वस्त्र पहनते थे।
- दिगंबर मानते हैं कि महिलाएं मोक्ष पाने में सक्षम नहीं हैं क्योंकि वे अपरिग्रह व्रत का पूर्णरूप से पालन नहीं कर सकती हैं। दूसरी ओर, श्वेतांबर के अनुसार, महिलाएं मोक्ष पाने के लिए समान रूप से योग्य हैं।
- दिगंबर मानते हैं कि भिक्षुओं को किसी भी भोजन की आवश्यकता नहीं होती है। श्वेतांबर इसका खंडन करते हैं क्योंकि उनका मानना है कि किसी भी भिक्षु या भिक्षुणी को अपने शरीर को पोषण देने के लिए भोजन की आवश्यकता होती है जब तक कि वे शरीर को त्याग न दें।

जैन दर्शन की नैतिकता :

जैन दर्शन मुख्यतः महावीर के उपदेशों पर आधारित है। महावीर के मतानुसार आत्मा असंख्य है। वस्तुतः जीव और आत्मा एक ही है एवं चैतन्य जीव का मूल लक्षण है। जैन दर्शन में मुख्यतः सात तत्वों का उल्लेख मिलता है। वह सात तत्व है – (1) जीव (2) अजीव (3) आश्रव (4) बंधन (5) संवर (6) निर्जर एवं (7) मोक्ष। इनमें से अंतिम पांच तत्व बंधन तथा मुक्ति से संबंधित है।

भारतीय दर्शन तथा जैन दर्शन में बंधन का अर्थ जीवों को दुःखों का सामना करना तथा निरंतर जन्म ग्रहण करना है। जैन दर्शन के अनुसार जीवों में अनंत चतुष्टय अर्थात अनंत आनन्द, अनंत ज्ञान, अनंत शक्ति एवं अनंत दर्शन निहित है। परंतु बंधन के कारण यह सब प्रकाशीत नहीं हो पाते। अब प्रश्न है की बंधन का कारण क्या है? जैन के मतानुसार जीव अज्ञान से अभिभूत होकर कर्म पुद्-गल से जुड़ जाता है, यही बंधन है। अज्ञान का कारण है चार वासनाएं – क्रोध, मान, माया और लोभ। इन वासनाओं को 'कषाय' कहते हैं। कषाय के कारण जीवों में कर्म पुद्-गल आकृष्ट होता है। जब कर्म पुद्-गल आत्मा की ओर प्रवाहित होता है उसे 'आश्रव' के नाम से संबोधित किया गया हैं। आश्रव दो प्रकार के होते है – भाव-आश्रव एवं द्रव्याश्रव। कर्म पुद्-गलों के प्रवेश से पूर्व जीव के भावों में एक प्रकार का परिवर्तन होता है उसे 'भाव-आश्रव' कहते हैं। उसके पश्चात जीव में पुद्-गलों का प्रवेश को 'द्रव्याश्रव' कहते हैं।

"आश्रव के अनुसार बंधन भी दो प्रकार के होते हैं – भाव बंध एवं द्रव्य बंध । भाव-आश्रव से भाव बंध और द्रव-आश्रव से द्रव बंध होता हैं। मन में कुविचारों का आना भाव बंध एवं जीव में पुद्-गल प्रविष्ट होने को द्रव बंध कहते हैं।"[12]

अन्य भारतीय दर्शनों की तरह जैन दर्शन का भी चरम लक्ष्य है मोक्ष की प्राप्ति। अर्थात बंधनों से मुक्त हो कर परम आनंद प्राप्ति ही मोक्ष है तथा कर्म पुद्-गलों का संयोग ही बंधन हैं। इसलिए कर्म पुद्-गलों की प्रवेश को रोकने से ही मुक्ति मिल सकता है। आत्मा में कर्म पुद्-गलों की प्रवेश को रोकने को 'संवर' कहते हैं। परंतु कर्म की कर्म पुद्-गलों को रोकने से मुक्ति नहीं मिल सकता हैं। जीव में प्रविष्ट पुद्-गलों का नाश करना पड़ता हैं। इस प्रकार आगामी पुद्-गलों को रोक कर एवं संचित पुद्-गलों को उन्मूलन कर जीव मुक्त हो जाता हैं।

अज्ञान के नाश से ही मुक्ति संभव है। जैन दर्शन में अज्ञान के नाश के लिए 'त्रिरत्न' पालन का उपदेश दिया गया है। सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन और सम्यक् चरित्र को 'त्रिरत्न' कहा जाता है। मोक्ष प्राप्ति में त्रिरत्नों का सम्मिलित सहयोग आवश्यक है। इसलिए उमास्वामी ने कहा है – "सम्यग्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि मोक्ष-मार्ग:।"[13]

सम्यक् चरित्र पालन के लिए पंच महाव्रत का पालन करना आवश्यक है। पंच महाव्रत पांच महाव्रत का सम्मिलित आकार है। यह महाव्रत इस प्रकार हैं –

- अहिंसा:- कायिक, वाचिक एवं मानसिक हिंसा का परित्याग करना;
- सत्य:- असत्य का परित्याग कर सत्यव्रत का पालन करना;
- अस्तेय:- चोरी का निषेध;
- ब्रह्मचर्य:- वासनाओं का त्याग करना;
- अपरिग्रह:- विषयासक्ति का परित्याग;

उपर्युक्त व्रतों का पालन कर मानव मोक्ष का योग्य होता है। मोक्ष को प्राप्त कर आत्मा अपना स्वरूप प्राप्त करता है अर्थात अनंत आनन्द, अनंत ज्ञान, अनंत शक्ति और अनंत दर्शन की प्राप्ति करता हैं।

3. समस्या का विधान : (Statement of the problem)

वर्तमान में मनुष्य प्रेम, दया, अहिंसा, शांति आदि मानवीय मूल्यों को भुलाकर भौतिक वादी, महत्वाकांक्षी और आत्म-केंद्रित हो गया है। मनुष्य अपने विलासिता पूर्ण जीवन में केवल शारीरिक सुखों को पूरा करने की कोशिश कर रहा है। इसी कारण संपूर्ण विश्व आज सांप्रदायिकता, जातिवाद, आतंकवाद आदि से पीड़ित है। ऐसी गंभीर स्थिति में बौद्ध एवं जैन नीतिशास्त्र का अध्ययन बहुत ही महत्वपूर्ण है। बौद्ध एवं जैन नीतिशास्त्र प्राचीन काल से मनुष्य के आध्यात्मिक मूल्य, नैतिक मूल्य और सामाजिक मूल्य को विकसित करने की कोशिश करते रहे। मानवीय मूल्य को उजागर कर व्यक्ति को अपनी परम

साध्य (मोक्ष) प्राप्त करने की ओर प्रेरित करता है। मेरा यह शोध प्रस्तावित शोध कार्य बौद्ध एवं जैन नीतिशास्त्र का एक दर्पण होगा।

4. समस्या की अनुसंधान : (Problem to be investigated)

इस शोध में सामाजिक एकता निर्माण, विश्व शांति स्थापन एवं मनुष्य में मानवीय मूल्य जैसे नैतिक और आध्यात्मिक गुणों को विकसित करने के लिए बौद्ध और जैन दर्शन की अवदान का अनुसंधान किया जाएगा। इसके अलावा यह भी चर्चा किया जाएगा की वर्तमान में बौद्ध और जैन नीतिशास्त्र का अध्ययन कितना सार्थक, प्रासंगिक एवं महत्वपूर्ण है।

5. शोध का उद्देश्य : (Objective of the research)

मेरे इस शोध कार्य का उद्देश्य बौद्ध और जैन दर्शन के नैतिक विचारों का अध्ययन करना है। साथ ही इस शोध कार्य का उद्देश्य है बौद्ध एवं जैन नीतिशास्त्र की समानता एवं असमानता पर प्रकाश डालना। साथ ही इस शोध पत्र का उद्देश्य हे - वर्तमान काल में जीवन-यापन हेतु मनुष्य में नैतिक आदर्शों को विकसित करना और मनुष्य में मानवीय मूल्यों को उजागर कर मानव चिंतन प्रवाह को श्रेष्ठता की ओर ले जाना। क्योंकि नैतिक विचारों के ज्ञान के माध्यम से ही विश्व में शांति लाया जा सकता है। इसके अलावा कुछ अन्य उद्देश्य भी है। जैसे –

- वर्तमान युग में बुद्ध और महावीर के बताएं मार्ग पर चलने वाले मनुष्य को क्या समस्याओं का सामना करना पड़ सकता हैं और इन समस्याओं का समाधान कैसे हो सकता है ?
- आधुनिक जीवन में बौद्ध एवं जैन नैतिकता क्यों महत्वपूर्ण है ?
- आधुनिक मानव जीवन में सामान्य रूप से और विशेष रूप से नीतिशास्त्र का क्या प्रासंगिकता है ?
- कैसे बौद्ध एवं जैन नीतिशास्त्र एक मानव को एक आदर्श मानव बनाने में सहायक है ?
- आधुनिक युग में आदर्श मानव की क्या भूमिका हो सकता है ?

6. परिकल्पना : (Hypothesis)

बुद्ध और महावीर के दार्शनिक चिंतन हमेशा से ही मानव कल्याण पर आधारित था। वह हमेशा मनुष्य के आध्यात्मिक एवं नैतिक विकास के लिए जीवन भर भिन्न-भिन्न मार्ग का खोज करते रहे। बुद्ध को विश्वास था कि चार आर्य-सत्य पालन के माध्यम से ही जीव निर्वाण की अवस्था प्राप्त कर सकता है। और इस अवस्था में सभी प्रकार दुःखों का निरोध हो जाता है। दूसरी और महावीर जीवों की मुक्ति के लिए त्रिरत्न एवं पंच महाव्रत पालन की बात कहे हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि बुद्ध और महावीर का नैतिक विचारों से मनुष्य प्रवृत्ति एवं उनके जीवन और जीवन धारण से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य उजागर हो सकता है।

7. शोध प्रारूप एवं अध्ययन पद्धति : (Research design and methodology)

यह शोध कार्य बौद्ध एवं जैन दर्शन की महत्वपूर्ण मूल ग्रंथ एवं महत्वपूर्ण सहायक ग्रंथों पर आधारित होगा। इसके लिए पुस्तकावलोकन की विधि की सहायता ली जाएगी। यह शोध मुख्यतः नवीन शोध होगा। इस शोध में शोध के व्यवहारिक पहलुओं का भी प्रयोग किया जाएगा। इसके अतिरिक्त विश्लेषणात्मक, ऐतिहासिक, वर्णनात्मक, तुलनात्मक और समीक्षात्मक पद्धति का भी उपयोग किया जाएगा।

8. तथ्य संकलन : (Tools to be used in the collection of data and analysis)

तथ्य संकलन हेतु विभिन्न पुस्तकालयों का भ्रमण किया जाएगा और पुस्तकालयों में उपलब्ध बौद्ध एवं जैन नीतिशास्त्र से संबंधित ग्रंथों का अध्ययन कर नैतिक विचारों से संबंधित तथ्य सामग्रियों को एकत्रित किया जाएगा। शोध के क्रम में इस विषय पर जानकारी रखने वाले गुरु वर और विद्वानों से संवाद किया जाएगा। इस शोध के क्रम में विषय से संबंधित प्रमुख चिंतक एवं विचारकों का प्रकाशित रचनाएं, शोध-प्रबंध आदि की सहायता ली जाएगी। इसके अलावा भिन्न-भिन्न बौद्ध एवं जैन मठों में जाकर तथ्य संग्रह किया जाएगा।

9. शोध कार्य का महत्व : (Significance of proposed work)

वर्तमान समय में मानव प्रवृत्ति मूलतः आत्म-केंद्रित, महत्वाकांक्षी और भौतिक वादी हो गए हैं। मनुष्य आत्म केंद्रित हो कर अपने आंतरिक मूल्य एवं संवेदनशीलता का परित्याग कर दिया है। इस स्थिति में नीतिशास्त्र से संबंधित विचारों का अध्ययन

हमारे नैतिक एवं आध्यात्मिक सचेतनता और पारमार्थिक मूल्यों को जगाने में अति आवश्यक है। मानवीय मूल्य को पुनः स्थापित करने में निश्चय ही बौद्ध एवं जैन नीतिशास्त्र संबंधी विचारों का अपरिमित योगदान रहेगा।

10. वर्तमान ज्ञान में योगदान : (Contribution to the existing knowledge)

नीतिशास्त्र तथा नैतिक विचारों का ज्ञान हमें मानवीय गुणों के विकास में सहायता करता है। मानवीय गुणों के विकास से मनुष्य तथा समाज में हिंसा, जातिवाद, आतंकवाद, और सांप्रदायिकतावाद जैसे बहुत सारे समस्या दूर हो सकता हैं। नैतिक ज्ञान से ही मनुष्य को विश्व शांति स्थापित करने की ओर प्रेरित किया जा सकता है। इसलिए नीतिशास्त्र का अध्ययन वर्तमान में अति आवश्यक है। यही कारण है कि वर्तमान समय में 'स्कूल पाठक्रम' में नैतिक शिक्षा को जोडने पर जोर दिया जा रहा है। नीतिशास्त्र के अध्ययन से हमें मानव प्रेम, मैत्रीपूर्ण व्यवहार, नैतिक नियम का अनुपालन, दृढ़ निश्चय, सही कर्म करने का ज्ञान मिलता है – जो की वर्तमान परिस्थिति में अत्यंत आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है।

11. अनुसंधान की सीमाएं : (Limitations of the research work)

इस शोध के कुछ सीमाएं हैं। जैसे –

(1) नीतिशास्त्र जागरूकता पर अधिक जोर देता है - यह उसे दायरे में सीमित करता है। क्योंकि नीतिशास्त्र उन विषयों की उपेक्षा करता है जो जागरूकता से बाहर हैं।

(2) नीतिशास्त्र में मनुष्य को सकारात्मक रूप में स्वीकार किया गया है। अर्थात नीतिशास्त्र यह मानता है कि मानव अपने जीवन में सकारात्मक रास्ते का चयन करेगा परंतु कुछ व्यक्तियों के लिए स्वतंत्र इच्छा और पसंद सीमित है।

(3) नीतिशास्त्र में नैतिक सिद्धांतों पर अधिक जोर दिया गया है। परंतु नैतिक सिद्धांत एवं नैतिक मानदंड का निर्धारण सरल नहीं है।

(4) नीतिशास्त्र मनुष्य के विचार, नैतिक आदर्श एवं भावनाओं से संबंधित मतवाद है। इसलिए नीतिशास्त्र में व्यक्ति के स्थूल चिंतन से अधिक आंतरिक चिंतन को महत्व दिया जाता है।

(5) नीतिशास्त्र केवल नैतिक आदर्श का स्वरूप निर्धारण करता है। परंतु इस आदर्श को हम अपने जीवन में कैसे स्थापित कर सकते हैं इसका आलोचना नीतिशास्त्र में नहीं किया गया है।

12. भविष्य में कार्य होने की संभावना : (Future work)

नीतिशास्त्र का अध्ययन मानव तथा समाज के लिए अति आवश्यक है। नीतिशास्त्र अतीत में भी महत्वपूर्ण था, वर्तमान में भी महत्वपूर्ण है और भविष्य में भी उपयोगी होगा। क्योंकि नैतिक विचारों की शिक्षा सर्व युग में आवश्यक है। इसलिए नीतिशास्त्र का आलोचना सभी भारतीय दर्शनों में किया गया है। भारतीय ऋषि-मुनियों तथा महापुरुषों को यह पता था के नीतिशास्त्र के अध्ययन से ही मानव का संपूर्ण विकास हो सकता है। इसलिए बौद्ध एवं जैन नीतिशास्त्र पर भविष्य में भी शोध कार्य होने की असीम संभावनाएं हैं।

13. संभावित अध्यायीकरण : (Tentative chaptalization)

अध्ययन की सुविधा के लिए यह शोध कार्य के विषय को निम्नलिखित संभावित अध्याय में विभक्त किया गया है:-

- प्रस्तावना
- प्रथम अध्याय : भारतीय दर्शन में नैतिक विचारों की अवधारणा।
- द्वितीय अध्याय : बौद्ध शास्त्र में नैतिक विचारों की अवधारणा।
- तृतीय अध्याय : जैन शास्त्र में नैतिक विचारों की अवधारणा।
- चतुर्थ अध्याय : बौद्ध एवं जैन नीतिशास्त्र की विचार: समानता एवं असमानता।
- पंचम अध्याय : वर्तमान संदर्भ में बौद्ध एवं जैन नीतिशास्त्र का प्रासंगिकता।
- उपसंहार

➢ प्रस्तावना:-

इस अध्याय में नीतिशास्त्र की परिभाषा, नैतिक दर्शन का स्वरूप, नैतिक अवधारण, मूल्य के बारे में सामान्य परिचय का अध्ययन किया जाएगा। नीतिशास्त्र मानवीय व्यवहार में उचित-अनुचित की मीमांसा हैं। नैतिकता मानव आदर्शों का एक समूह है जो सुखी जीवन जीने के लिए हमारे व्यवहार को निर्धारित करता है। हम नैतिकता के साथ एक ईमानदार जीवन जीते हैं। यह हमें अपने आसपास के लोगों के साथ मित्रता और विश्वास हासिल करने के लिए प्रेरित करता है।

मनुष्य सृष्टि में एकमात्र विचारशील प्राणी है। विचार के माध्यम से ही मनुष्य में विवेक प्रकट होता है। विवेक पूर्ण आचरण ही मानव का प्रधान लक्षण है। विवेक शून्य मनुष्य पशु के समान होता है। विवेक ही मनुष्य को सोचने में मजबूर करता है कि, इस जगत में उसके जीवन का क्या लक्ष्य है एवं उस लक्ष्य को कैसे वह प्राप्त कर सकते हैं। नीतिशास्त्र मनुष्य को अपना परम साध्य (मोक्ष) एवं परम साध्य प्राप्त करने का मार्ग निर्देश करता है। परम श्रेय एवं आचरण के सही-गलत के निर्धारण के संबंध में अनेक प्रश्न का उत्तर हमें नीतिशास्त्र अध्ययन से मिलता है।

➢ प्रथम अध्याय : भारतीय दर्शन में नैतिक विचारों की अवधारणा:-

इस खंड में भारतीय दर्शन में नैतिकता का स्रोत, स्वरूप, परिभाषा, नैतिक सिद्धांत, भारतीय नीतिशास्त्र का लक्ष्य, विशेषता इत्यादि विषय पर चर्चा किया जाएगा। वेद-उपनिषद तथा अन्य भारतीय दर्शन संप्रदाय में चर्चा किए गए नैतिक विचारों का अध्ययन किया जाएगा।

भारतीय नीतिशास्त्र का स्रोत है वेद, उपनिषद, धर्मशास्त्र, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, भगवद् गीता, सूफी साधकों का शिक्षा, विद्यासागर, रवीन्द्रनाथ और महात्मा गांधी आधुनिक दार्शनिकों का शिक्षा इत्यादि ।

भारतीय नीतिशास्त्र का लक्ष्य एवं विशेषता :

- भारतीय नीतिशास्त्र सबसे पुराना नैतिक दर्शन है।
- भारतीय नैतिक दर्शन का उद्देश्य है नैतिक आदर्शों की चर्चा करना।
- भारतीय नीतिशास्त्र का लक्ष्य सुख और दुख से परे जाकर सर्वोच्च वास्तविकता की प्राप्ति करना है।
- भारतीय नैतिक विचारक सभी प्राणियों के लिए प्रेम, करुणा, अहिंसा और सद्भावना का उपदेश देते हैं।
- भारतीय विचारक कर्म के नियम में विश्वास करते हैं।

➢ द्वितीय अध्याय : बौद्ध शास्त्र में नैतिक विचारों की अवधारणा:-

इस अध्याय में महात्मा बुद्ध का सामान्य परिचय, बौद्ध दर्शन के दार्शनिक विचार एवं नैतिक विचारों का अध्ययन किया जाएगा। गौतम बुद्ध का जीवन, बुद्ध के उपदेश, आर्यसत्य, दार्शनिक तत्व - प्रतीत्य समुत्पाद, क्षणभंगुरवाद, अनात्मवाद, पुनर्जन्मवाद, कर्म सिद्धांत और दुःख मुक्ति मार्ग पर प्रकाश डाला जाएगा। बौद्ध सिद्धांत के अनुसार, ज्ञान नैतिकता की नींव है। ज्ञान हमारे विवेक को और विवेक हमारे आचरण का निर्धारण करता है।

बौद्ध दर्शन भारतीय दर्शन के सबसे महत्वपूर्ण दर्शनों में से एक है। जिसे नैतिक, बौद्धिक, सामाजिक और मानवतावादी दर्शन के नाम से भी जाना जाता है। प्राचीन काल से, बौद्ध दर्शन द्वारा प्रचारित प्रेम, साहचर्य और करुणा ने सभी लोगों का दिल जीत लिया है और नैतिक चेतना को उभरने के लिए लाया है। बौद्ध दर्शन एक सार्वभौमिक, शाश्वत सनातन धर्म है जो ज्ञान-शील-समाधि के माध्यम से मन को शुद्ध करता है और सभी सांसारिक दुखों और पीड़ाओं से मुक्ति का मार्ग देखता है। यह दर्शन मानवीय मूल्यों को विकसित करने में मदद करता है।

➢ तृतीय अध्याय : जैन शास्त्र में नैतिक विचारों की अवधारणा:-

इस खंड में जैन दर्शन का सामान्य परिचय, जैन दर्शन के दार्शनिक सिद्धांत, नैतिक सिद्धांतों पर चर्चा किया जाएगा। भारतीय दर्शन में बन्धन के कारण को अज्ञान की संज्ञा दी गयी है। समस्त भारतीय दर्शन इस मत से सहमत हैं कि दुःख एवं बन्धनों का मूल कारण मनुष्य का अज्ञान है। यह अज्ञान केवल बौद्धिक ही नहीं वरन् आध्यात्मिक एवं मनोवैज्ञानिक भी है। यहाँ मोक्ष एवं बन्धन की इस विवेचना को जैन दर्शन के दृष्टिकोण से समझने का प्रयास होगा।

जैन दर्शन भारत की महत्वपूर्ण प्राचीन और सार्वभौमिक धार्मिक और सांस्कृतिक प्रणालियों में से एक है जिसकी उत्पत्ति मानवता के कल्याण के लिए हुई थी। जैन दर्शन में चौबीस तीर्थंकर थे। ऋषभनाथ जैन दर्शन के संस्थापक थे और पहले तीर्थंकर थे और अंतिम तीर्थंकर वर्धमान महावीर थे जो गौतम बुद्ध के समकालीन भी थे। जैन शब्द 'जिन' शब्द से बना है जिसका अर्थ है विजय प्राप्त करना - जिसने सफलतापूर्वक अपने वासना और इच्छाओं पर विजय प्राप्त कर ली है। सभी चौबीस तीर्थंकरों को जिन के रूप में जाना जाता है क्योंकि उन्होंने सभी वासना (राग और द्वेष) पर विजय प्राप्त की है और मोक्ष प्राप्त किया है। ऐसा माना जाता है कि सभी मनुष्यों में जिन बनने की क्षमता है। जैन दर्शन ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं करता है। वास्तव में यह मानता है कि मनुष्य सबसे श्रेष्ठ है जो मोक्ष या आत्मा की मुक्ति प्राप्त कर सकता है। जो उसके अपने कर्म और प्रयास की शुद्धता पर निर्भर करता है। जैन दर्शन में मोक्ष सर्वोच्च और सबसे महान उद्देश्य है जिसे प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है।

➢ **चतुर्थ अध्याय : बौद्ध एवं जैन नीतिशास्त्र की विचार: समानता एवं असमानता:-**

इस अध्याय में बौद्ध एवं जैन नीतिशास्त्र का अध्ययन करके उनके नैतिक विचारों का चर्चा किया जाएगा। साथ ही साथ बौद्ध एवं जैन नीतिशास्त्र में उल्लिखित नैतिक तत्वों के समानता एवं असमानता पर प्रकाश डाला जाएगा। बौद्ध दर्शन में वर्णित 'बन्धन के कारण', 'मुक्ति मार्ग', 'मुक्ति की स्वरूप' की तुलना में जैन दर्शन में वर्णित 'बन्धन के कारण', 'मुक्ति मार्ग', 'मुक्ति की स्वरूप' की चर्चा की जाएगी।

बौद्ध एवं जैन नीतिशास्त्र की समानता :

1.बौद्ध एवं जैन दर्शन पुनर्जन्म में विश्वास करता था।

2. बौद्ध एवं जैन दर्शन ईश्वर को ब्रह्मांड का निर्माता नहीं मानता था।

3. बौद्ध दर्शन और जैन दर्शन दोनों कर्मवाद में और उनकी अवधारणा में विश्वास करते हैं।

4. दोनों दर्शन मानवता के कल्याण के लिए प्रचारित किया गया था।

5. बौद्ध और जैन दर्शन में आत्मा की मुक्ति सर्वोच्च और सबसे महान उद्देश्य मानते थे।

बौद्ध एवं जैन नीतिशास्त्र की असमानता :

1.बौद्ध दर्शन में दुख से निवृत्ति या मुक्ति पाने के लिए आठ मार्गों का अनुसरण करने के लिए कहा गया है दूसरी और जैन दर्शन में दुख से मुक्ति पाने के लिए त्रिरत्न का पालन तथा पांच महाव्रत्न पालन करने का निर्देश दिया गया है।

2. गौतम बुद्ध के मृत्यु के बाद बौद्ध दर्शन दो संप्रदाय में विभक्त हुई एक हीनयान एवं महायान दूसरी और जैन दर्शन में दो संप्रदाय पाए जाते हैं दिगंबर और श्वेतांबर ।

3. बौद्ध दर्शन के प्रणेता एक ही थे वह है गौतम बुद्ध दूसरी और जैन दर्शन का प्रणेता थे चौबीस तीर्थंकर जिनमें से पहले थे ऋषभदेव एवं अंतिम थे महावीर।

4. जैन दर्शन में मुक्ति के लिए कठोर तपस्या करने की सलाह देता है।

5. बौद्ध दर्शन भारत एवं भारत के बाहर भी बहुत से देश में प्रचार किया गया था लेकिन जैन धर्म भारत में ही प्रसिद्ध हुए थे।

➢ पंचम अध्याय : वर्तमान संदर्भ में बौद्ध एवं जैन नीतिशास्त्र का प्रासंगिकता :-

बौद्ध एवं जैन नीतिशास्त्र का अध्ययन वर्तमान युग में प्रासंगिकता हमें कई दृष्टिकोणों से दिखाई देती है। बौद्ध एवं जैन दर्शन के नैतिक विचार, आदर्श, अहिंसा नीति, धर्म संबंधी विचारों का मूल्य ऐसे थे जो सर्वकालीन कहा जा सकता हैं। यह आवश्यक नहीं कि प्रत्येक व्यक्ति सभी आदर्शों पर शत प्रतिशत सहमत हो । जो तथ्य कालानुसार दिये गये थे वे अवश्य काल बाधित हैं किन्तु मानवीय सद्भाव, धर्म व अहिंसा, मुक्ति मार्ग आदि से संबंधित विचार युग युगीन विचार कहे जा सकते है। यही कारण है कि आचार्य बलदेव ने कहा है कि - महात्मा बुद्ध और महावीर स्वामी का व्यक्तित्व तथा उपदेश व संवाद ऐसे थे जो समय के साथ पुराने नहीं हुए बल्कि उनकी प्रासंगिकता वर्तमान युग में भी यथायथ है।

वर्तमान में लोग मानवता को भूल जाते हैं और बहुत स्वार्थी हो जाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप दैनिक समाज में शांति और व्यवस्था बाधित होती है। विभिन्न अनैतिक और कुकर्मों के प्रभाव से समाज में धीरे-धीरे भ्रष्टाचार बढ़ रहा है। इस गंभीर स्थिति में, यदि हम बौद्ध दर्शन के "आत्म दीपो भव" इस महान संदेश को स्वीकार करते हैं, तो यह हमारे लिए आध्यात्मिकता और नैतिकता के साथ मानवीय गुणों को विकसित करने में एक महत्वपूर्ण योगदान दे सकता हैं। इसके अलावा वर्तमान भ्रष्ट समाज के लिए यह नितांत आवश्यक है कि वह बौद्ध दर्शन में वर्णित गौतम बुद्ध के उपदेशों और शिक्षाओं के मार्ग पर चलकर सभी सांसारिक दुखों से मुक्ति मिल सकता हैं।

➢ उपसंहार :-

कुछ लोग सोचते हैं कि जीवन तभी सफल होता है जब हमारे पास बहुत धन और शक्ति हो। लेकिन हम उनसे कभी संतुष्ट नहीं होते और हमेशा उन्हें खोने से डरते हैं। जितना अधिक धन हम प्राप्त करते हैंए विशेष रूप से जब हम दूसरों को वंचित करके प्राप्त करते हैंए तो हम उतने ही अधिक शत्रु बना लेते हैं। यह एक सफल जीवन नहीं है। अगर हम बहुत से लोगों से दोस्ती कर सके और अगर लोग हमारी मौजूदगी में खुश हैं तो वही एक सफल जीवन है। ऐसे में हमारे पास कितना पैसा और ताकत है यह महत्वपूर्ण नहीं है। चाहे कुछ भी हो हमें भावनात्मक समर्थन मिलेगा और उनका सामना करने की ताकत मिलेगा।

इस अध्याय में उपरोक्त सभी अध्यायों में आलोचित तथ्य का निष्कर्ष प्रस्तुत किया जाएगा। बुद्ध व जैन दर्शन के नैतिक विचारों से मानवीय गुणों का विकाश किया जा सकता है। जिसके द्वारा राष्ट्रीय एकताए साम्प्रदायिक सद्भावए विश्व-शांति, आदि स्थापित की जा सकती है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि बौद्ध एवं जैन नीतिशास्त्र की प्रासंगिकता वर्तमान में भी है।

14. संदर्भ सूची:- (Reference) :

1. Sinha, Dr. Jadunath. A Manual of Ethics, The Central Book Agency, Calcutta,1947, P – 2.
2. मुनि, आचार्य देवेन्द्र. नीतिशास्त्र: जैन दर्शन के संदर्भ में, यूनिवर्सिटी पब्लिकैशन, नई दिल्ली 2000, पृ-63.
3. Sinha, Dr. Jadunath. A Manual of Ethics, The Central Book Agency, Calcutta,1947, P – 2.
4. मुनि, आचार्य देवेन्द्र. नीतिशास्त्र: जैन दर्शन के संदर्भ में, यूनिवर्सिटी पब्लिकैशन, नई दिल्ली, 2000, पृ-69.
5. आत्रेय, डॉ० भी०. भारतीय नीतिशास्त्र का इतिहास, हिन्दी समिति, सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश, 1964, पृ-613.
6. पाठक, डॉ० दिवाकर. भारतीय नीतिशास्त्र, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, 1994, पृ-3.
7. सांकृत्यायन, राहुल. मज्झिम-निकाय: बुद्ध-वचनामृत-१, महाबोधि सभा, बनारस, 1933, पृ-40.
8. सेन, रनब्रत. धम्मपदं, हरफ प्रकाशनी, कलकाता, 2021, पृ-201.
9. सिन्हा, प्रो० हरेन्द्र प्रसाद. भारतीय दर्शन की रूपरेखा, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 2018 पृ-125-126.
10. शर्मा, चन्द्रधर. भारतीय दर्शन: आलोचना और अनुशीलन, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 2013, पृ-60 .
11. सिन्हा, प्रो० हरेन्द्र प्रसाद. भारतीय दर्शन की रूपरेखा, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 2018 पृ-138 .
12. शर्मा, चन्द्रधर. भारतीय दर्शन: आलोचना और अनुशीलन, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 2013, पृ-42 .
13. चैटर्जी, एस०& दत्त, डी०. भारतीय दर्शन, पुस्तक भंडार, पटना, 2020, पृ-126 .

15. ग्रंथ सूची:-

1. आचार्य, नरेन्द्रदेव. बुद्ध धर्म -दर्शन, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 2016.
2. आत्रेय, डॉ० भी०. भारतीय नीतिशास्त्र का इतिहास, हिन्दी समिति, सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश 1964.
3. उपाध्याय, आचार्य बलदेव. बौद्ध दर्शन-मीमांसा, अनुसंधान संस्थान, वाराणसी, 2000.
4. कस्सपो, भिक्खु जगदीस. अभिधम्मपिटक धम्मसंगणि, पालि प्रकाशन मंडल, नालन्दा, 1960.
5. चैटर्जी, एस०& दत्त, डी०.भारतीय दर्शन, पुस्तक भंडार, पटना, 2020.
6. जैन, डॉ० प्रतिभा. जैन नीतिशास्त्र एक तुलनात्मक विवेचना, पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी 2002.
7. जैन, डॉ० सागर मल. जैन धर्म सिद्धान्त का तुलनात्मक अध्ययन, राजस्थान प्राकृत भारती संस्थान, जयपुर, 1982.
8. जोशी, जे० एन० & पन्त, डॉ० कमला. जैन धर्म और दर्शन, White Falcon Self-Publishing Platform, Patna, 2015.
9. तिवारी, मनीषा. बुद्ध एवं जैन दर्शन, भाषा प्रकाशन, वाराणसी, 2020.
10. पाठक, डॉ० दिवाकर. भारतीय नीतिशास्त्र, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, 1994.
11. पाण्डेय, डॉ० गोविन्दचन्द्र. बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास, उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 2001.
12. मुनि, आचार्य देवेन्द्र. नीतिशास्त्र: जैन दर्शन के संदर्भ में, यूनिवर्सिटी पब्लिकैशन, नई दिल्ली 2000.
13. सेन, रनब्रत. धम्मपदं, हरफ प्रकाशनी, कलकाता, 2021.
14. सिन्हा, प्रो० हरेन्द्र प्रसाद. भारतीय दर्शन की रूपरेखा, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 2018.
15. सांकृत्यायन, राहुल. मज्झिम-निकाय: बुद्ध-वचनामृत-१, महाबोधि सभा, बनारस, 1933.
16. शर्मा, चन्द्रधर. भारतीय दर्शन: आलोचना और अनुशीलन, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 2013.
17. Sinha, Dr. Jadunath. A Manual of Ethics, The Central Book Agency, Calcutta,1947.